www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक वर्ष की प्रज्ञा प्रव्रज्या का विशेष आमंत्रण

यह युग परिवर्तन की वेला है। विनाश-विभीषिकाओं से भरी पूरी तमिस्रा विदा होने जा रही है और निराशा, आशंका का वातावरण बदलने वाला है। अरुणोदय अपने आगमन का परिचय दे रहा है। ऐसे आकस्मिक परिवर्तन मनुष्य की स्वतः सामर्थ्य से नहीं सृष्टा की इच्छा और व्यवस्था के अन्तर्गत ही सम्पन्न होते हैं। मनुष्य के हाथ में सोंपी सृष्टि व्यवस्था जब लड़खड़ाने लगती है, तब बागडोर नियन्ता अपने हाथ में लेते और असन्तुलन को सन्तुलन में बदलते हैं। इन दिनों भी वही प्रक्रिया दुहराई जा रही है। "यदायदाहि धर्मस्य....." वाला वचन इस बार भी प्राचीन अन्य अवतरणों की तरह निभने जा रहा है।

इस परिवर्तन से—तमिस्रा के प्रकाश में परिणत होने से समूची विश्व व्यवस्था लाभान्वित होती है। विनाश का विकास में परिवर्तन होने से सभी को सन्तोष की सांस लेने का अवसर मिलता है। आशा की उदीयमान किरणों को देखकर किस की आँखों में उल्लास नहीं चमकता। पर सबसे बड़ा लाभ उन्हें होता है जो इस अदृश्य प्रवाह में दृश्य भूमिका निभाने में अपने शौर्य, साहस का परिचय देते हैं और सहयोगी बड़भागियों की तरह अग्रिम पंक्ति में खड़े होते हैं।

भगवान के अवतरण सदा अदृश्य चेतना प्रवाहों के रूप में होते हैं। जागृत आत्माएँ उनसे अनुप्राणित होकर सृष्टा की इच्छा से अपनी इच्छा मिलाती हैं। फलतः वे ऐसा श्रेय उपलब्ध करते हैं जैसा कि निजी सामर्थ्य के बलबूते वे कर नहीं सकते थे। तूफान के साथी बनकर पत्ते और धूलिकण तक आकाश चूमते देखे जाते हैं। नदी प्रवाह में सम्मिलित होकर तिनके तक मजेदार लम्बी यात्रा करते और समुद्र तक जा पहुँचते हैं।

सूर्योदय की प्रथम किरणें ऊंचे पर्वत शिखरों पर चमकती हैं। इसी प्रकार जागृत आत्माएँ युग चेतना को आगे बढ़कर अपनाती और अनुकरण के लिए असंख्यों को प्रोत्साहित करती हैं। मुर्गा बांग देता है तो असंख्यों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करबट बदलते, आँखें मलते हैं, अँगड़ाते हुए उठ खड़े होते हैं। विषम परिस्थियों में युगप्रहरी भी एकाकी खड़े होते हैं। निद्रितों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व स्वयं वहन करते हैं और संकटों को अकेले ही चुनौती देते रहते हैं। ऐसों को आत्मसन्तोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह के त्रिविध लाभ अनायास ही उपलब्ध होते हैं।

हनुमान यदि अपने बलबूते पहाड़ उठाने, समुद्र लाँघने, लंका उजाड़ने में समर्थ रहे होते तो बालि के डर से भागकर छिपे हुए सुग्रीव के यहाँ नौकरी क्यों करते ? वालि से स्वयं ही क्यों न निपट लेते ? अर्जुन यदि अपने पराक्रम से महाभारत जीत सके होते तो द्रोपदी का भरी सभा में अपमान क्यों देखते ? अज्ञातवास के दिनों जिस-तिसकी नौकरी करके क्यों समय गुजारते ? शत्रुओं से वे तब क्यों न निपट लेते ? यह भगवान की इच्छा में अपनी इच्छा मिलाने का ही प्रतिफल है कि उपरोक्त दोनों भक्तजनों को अपने-अपने समय का 'हीरो' बनने जैसा श्रेय मिला। असहाय पाण्डवों की इतनी बड़ी सेना खड़ी हुई थी जो उस महायुद्ध को जीत सकी। भगवान तक ने उनके घोड़े चलाये। हनुमान के साथ रीछ-वानरों की विशाल सेना उस मोर्चे पर आ खड़ी हुई जिसमें मात्र मरण ही दीखता था। इसे दैवी प्रवाह में सहायक बनने का चमत्कार ही कहा जा सकता है।

बुद्ध, गान्धी के समय में उनके साथियों ने जितना त्याग किया उसकी तुलना में कहीं अधिक श्रेय पाया। ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते। समय को पहचानने की, उससे लाभ उठाने की दूरदर्शिता जिन्हें उपलब्ध होती है वे लोभ-मोह के प्रलोभनों से बचते और कृपणताग्रस्त स्वजनों के प्रतिगामी आग्रहों की उपेक्षा करते हुए—प्रवाह चीरकर उलटी वह सकने वाली मछली की तरह आत्मा की पुकार का अनुसरण करते हैं। उस उदात्त साहसिकता का प्रतिफल भी उन्हें कम नहीं मिलता।

अग्निकाण्ड, महामारी, बाढ़, दुर्भिक्ष, दुर्घटना जैसे आपत्तिकालीन अवसरों पर उदारचेता निजी लाभ-हानि की बात नहीं सोचते वरन् समय की माँग पूरी करने के लिए सहायता को दौड़ते हैं। वैसे अवसरों पर भी जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाभ-हानि का जोड़ बाकी करते हैं, किसी कोने में छिपे रहते हैं उन्हें वह चतुरता भारी पड़ती है। लोक-भर्त्सना और आत्म प्रताड़ना के पश्चात्ताप में उन्हे सर्वदा जलते रहना पड़ता है। यह समय भी ऐसा ही है जिसमें मानवीय अस्तित्व जीवन-मरण के संकट में फँसा है। इन क्षणों में भी जिन्हें पेट प्रजनन की ही पड़ी रहे, समझना चाहिए कि उन दुर्भाग्यग्रस्तों को समय को समझने और उससे लाभ उठाने की समझ ने साथ ही नहीं दिया और वे उस सुयोग से वंचित रह गए जिससे निश्चय ही कृतकृत्य बना जा सकता था।

निर्वाह और परिवार की समस्याएं उतनी जटिल नहीं हैं कि जिन्हें इस तरह न सही उस तरह न सुलझाया जा सके। पक्षाघात एवं मरण संकट आ खड़ा हो तो भी सृष्टा की व्यवस्था इस प्रकार नहीं तो उस प्रकार सन्तुलन बिठा देती है। भावना हो तो बुद्ध, शंकर, समर्थ, विवेकानन्द, गाँधी, विनोवा जैसी भूमिकाएँ हर व्यक्ति निभा सकता है। कृपणता और संकीर्णता की खुमारी चढ़ी हो तो इन्द्र और कुवेर भी अपने को व्यस्त, चिन्तित कहते हुए परमार्थ प्रयोजनोंके लिए असमर्थ बताने वाले सैकड़ों बहाने गिनाने लगेंगे। यह समय ऐसे बहाने अपनाने का है नहीं। जो अपनायेंगे वे घाटे में रहेंगे।

इन दिनों जागृत आत्माओं के समयदान की माँग से आकाश गूँजता है। जो उसे सुन सकें वे कान खोलें और सुनें। जो सामने खड़ी युग चुनौती को देख सकते हैं वे आँख खोलें और देखें। जिनमें दूरदर्शिता हो वे युगधर्म को समझें और अपने आप ही कर्तव्य का निर्धारण करें। जिनकी भावनाएँ उठें वे एक ही बात सोचें कि युग सृजन के लिए समय दान की बढ़ी चढ़ी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने का साहस किस प्रकार प्रकट किया जा सकता है। प्रतिभावानों, भावनाशीलों और ऐसे प्रामाणिक व्यक्तियों की इन दिनों अत्यधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है जो स्वयं पार हो सकें और अपनी नाव पर बिठाकर असंख्यों को पार लगा सकें।

युग परिवर्तन जैसे महान कार्यों में कोई एकाकी व्यक्ति अपने बलबूते ही अपनी योजना बनाकर कुछ कर सकने में समर्थ नहीं हो सकता। डेढ़ चावल की खिचड़ी—ढाई ईंट की मस्जिद बनाने और अपनी ढपली अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राग अलापने वाले अहमन्यता प्रदर्शित करने और आत्मश्लाघा का बचकानापन ही प्रदर्शित कर सकते हैं। रीछ-वानर, ग्वालबाल, सत्याग्रही, बौद्ध परिव्राजक सभी संघबद्ध होकर लड़े थे। देवताओं की संयुक्त शक्ति से असुर निकंदिनी दुर्गा का अवतरण हुआ था। स्मरण रहे इन दिनों किसी भी समझदार को नेता बनने की मूर्खता नहीं करनी चाहिए। उसमें उपहासके अतिरिक्त और कुछ पल्ले न पड़ेगा। जो अभीष्ट है वह संयुक्त प्रयासों से ही सम्भव है। अकेला चना कहीं भी भाड़ नहीं फोड़ सका है। इन दिनों तो यह किसी भी प्रकार सम्भव नहीं। संयुक्त शक्ति के रूप में सैन्य संगठन का अंग बनकर रहना और सृष्टा की युगान्तरीय योजना का अंग बनकर काम करने में ही उत्साह की सार्थकता है। जागृत आत्माओं का प्रज्ञा अभियान का अंग बनकर काम करना ही एकमात्र मार्ग है जिसके कुछ कहने लायक परिणाम निकल सकते हैं। तिनके मिलने से रस्सा और धागे मिलने से कपड़ा बनने की बात जो जानते हैं उन्हें यह भी समझना चाहिए कि नेतागीरी की ललक में किसी को भी बिखराब उत्पन्न नहीं करना चाहिए। महाप्राणों के लिए चल रही सृष्टा की चतुरंगिणी के अंश बनकर रहने और साथियों के साथ कदम मिलाकर चलना ही श्रेयस्कर है।

स्थानीय प्रज्ञा संस्थानों के सुसंचालन में जो सीमित समय दे सकते हैं उन्हें स्वाध्याय मण्डलों के संस्थापन, संचालन में भावभरा योगदान देना चाहिए और अपने प्रभाव क्षेत्र में नवजागरण की गतिविधियों को व्यापक बनाने में कुछ उठा न रखना चाहिए। समयदान, अंशदान के रूप में हर प्रज्ञा परिजन का कहने लायक अनुदान होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त इन दिनों उनकी आवश्यकता है जो अधिक समय दे सकें, अधिक समय घर से बाहर रह सकें। आवश्यकता उनकी पड़ रही है जो बादलों की तरह परिभ्रमण पर निकलें और प्यासी धरती को मखमली चादर उढ़ाने के लिए मूसलाधार बरसें। सूर्य और चन्द्रमा की तरह धरातल के हर कोने में गर्मी, रोशनी बखेर सकने में सफल हों। पवन यदि दौड़े नहीं तो प्राणी उसे तलाश करने कहाँ-कहाँ भटकें। दुर्घटनाग्रस्त असमर्थों के पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वयं ही सहायकों को पहुंचना पड़ता है। वरिष्ठ प्रज्ञापुत्रों को अपनी योजना इसी आधार पर बनानी और प्रव्रज्या के साथ जोड़नी चाहिए।

इस वर्ष समस्त प्रज्ञा संस्थानों को अपने वार्षिकोत्सव प्रज्ञा आयोजनों के रूप में सम्पन्न करने के लिए कहा गया है। उनमें केन्द्र से प्रचारक प्रतिनिधियों की—गायकों की—वक्ताओं की टोलियाँ भेजी जायेंगी। उस उत्तरदायित्व को वहन कर सकने वाली प्रतिभाएँ इन दिनों तलाशी जा रही हैं ताकि उन्हें प्रशिक्षण के उपरान्त कार्यक्षेत्र में भेजा जा सके। इसी प्रकार विनिर्मित प्रज्ञा संस्थानों में भी कुछ महीने या सर्वदा रहकर स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से सत्प्रवृत्ति संवर्धन का सर्वत्र मौहौल बनाया जाना है। शान्तिकुंज में बढ़ती हुई प्रवृत्तियों के लिए उपयुक्त प्रबन्धक, प्रशिक्षक एवं शोधकर्ता चाहिए। जिनकी स्वयं सेवक मनोभूमि हो ऐसे कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसे-ऐसे अनेक कामों के लिए ऐसे समयदानियों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता पड़ रही है जो घर से बाहर रहकर काम कर सकें। अच्छा होता यदि जीवनदानी ब्रह्मचारी शंकराचार्य, समर्थ रामदास, विवेकानन्द, ज्ञानेश्वर की तरह अपने को युगधर्मके निर्वाहमें समर्पित करते। पर ऐसा न बन पड़ने पर इतने से भी काम चल सकता है कि एक वर्ष का प्रव्रज्या व्रत लिया जाय और उतने समय बाद वापिस लौट जाया जाय। बहुतों का थोड़ा-थोड़ा समय मिलने से भी काम चलेगा। इस वर्षके प्रायः दस हजार आयोजनों और २४०० प्रज्ञापीठों की सुव्यवस्था के लिए एक वर्ष की प्रवज्या से ही समय की माँग पूरी हो सकेगी।

तीर्थयात्रा का पुण्य फल भारतीय धर्म में असाधारण बताया गया है। इसके अनेक कारण हैं। धर्म प्रचार की गाँव-गांव पदयात्रा में उपेक्षित क्षेत्रों को आदर्शवादी सृजनात्मक प्रेरणाएँ मिलने से, उस प्रयास में संलग्न लोगों को उच्चकोटि का पुण्यफल मिलता है। पर साथ ही उसमें स्वार्थ साधन भी कम नहीं है। परिभ्रमण से विभिन्न स्थानों की जलवायु एवं आहार का लाभ मिलने से एक ही स्थान पर रहने के कारण जो कमी रह जाती है उसकी पूर्ति होती रहती है। अधिकाधिक लोगों के साथ सम्पर्क साधने से मनुष्यों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विभिन्नताओं और विपन्नताओं को समझने का अवसर मिलता है, फलतः व्यवहार कुशलता और बुद्धिमत्ता का वह पक्ष उभरता है जो एक ही सीमित क्षेत्र में कैद रहने के कारण दबा पड़ा रहता है। पदयात्रा को अनेक रोगों की—विशेषतया मानसिक रोगों की—रामबाण दवा माना गया है।

गोखले ने गाँधी को समूचे देश की यात्रा करने और जनसाधारण की स्थिति समझने के लिए प्रेरित किया था। तभी वे वास्तविक भारत की सही स्थिति देख समझ सकने में समर्थ हो सके और वह सोच सके जो यथार्थता पर आधारित एवं व्यवहारिक है। विवेकानन्द की सही योजनायें तब कार्यान्वित हुईं जब उनने देश के देहाती क्षेत्रों का लम्बा दौरा पूरा कर लिया। ऋषि-मनीषियों की शिक्षा तथा साधना में एक अति महत्वपूर्ण तथ्य लम्बा प्रव्रज्या का भी जुड़ा रहता था। जो चार धामों के लक्ष्य के रूप में प्रयोग होती थी। वे धर्म प्रचार की पदयात्रा के अतिरिक्त तीर्थयात्रा के आधार पर अपनी व्यवहार बुद्धि का भी विकास करते थे। यह प्रक्रिया उन सभी प्रतिभावानों के लिए आवश्यक है जो अपनी व्यवहार कुशलता बढ़ाने तथा सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में प्रवेश करने के इच्छुक हैं।

हर परिवार से एक व्यक्ति निःस्वार्थ समाज सेवा के लिए मिलने की धर्म परम्परा भारतीय संस्कृतिक का अविच्छिन्न अंग है। यह मात्र निवृत्त वानप्रस्थों पर ही लागू नहीं होती थी वरन् किशोर, युवक एवं प्रौढ़ भी इस सेवायज्ञ में अपनी आहुतियाँ देते थे। परिवार के अन्य सदस्य उनके निर्वाह एवं उत्तरदायित्व को पूरा करते रहने की जिम्मेदारी अपने शिर पर उठाते हैं। इस प्रथा का प्रचलन पिछले दिनों कई बार उभरा है।

गुरु गोविन्दसिंह ने अपने प्रभाव क्षेत्र के हर परिवार से एक धर्मसेवी माँगा था और जो मिले थे उन्हें सिख बनाया था। राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र से हर परिवार का एक सदस्य मिलटरी में भर्ती होना अपनी शान मानता रहा है। समर्थ गुरु रामदास ने भी उस परम्परा को निखारा था और अपने प्रभाव क्षेत्र से अगणित सैनिक शिवाजी की सेना में भर्ती कराये थे। सत्याग्रह आन्दोलन के दिनों में स्वर्गीय महावीर त्यागी जिन गाँवों में जाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वहाँ याचना करते कि इस गाँव से भी दो राम-लक्ष्मण लंका विजय और धर्म राज्य सृजन के निमित्त मिलने चाहिए। यह याचना बहुत हद तक सफल रही थी और गाँव की संयुक्त श्रद्धा ने न्यूनतम दो-दो सत्याग्रही स्वयंसेवक प्रदान किये थे।

थाईलैंड में अब तक यह प्रथा रही है कि हर व्यक्ति को एक वर्ष का सन्यास लेकर बौद्ध विहारों में रहना पड़ता था। उस देश का राजा तक इस परम्परा का निर्वाह करता रहा है। इस आधार पर देश को अगणित महत्व-पूर्ण व्यक्ति अवैतनिक रूप में सार्वजनिक सेवा के लिए मिलते थे। इस प्रकार साधना और सेवा के समन्वय से वह सन्यास सच्चे अर्थोंमें सार्थक होता था। जब तक यह प्रथा अक्षुण्य रही तब तक वह देश हर दृष्टि से समर्थ, सम्पन्न संस्कृत एवं समुन्नत बना रहा।

चीन आदि कई देशों में अफसरों की लम्बी यात्राएँ करने और देश की स्थिति का प्रत्यक्ष अवलोकन करने का नियम है। मिलिटरी के जवानों को भी इस आधार पर अनुभव अभ्यास अर्जित करने के लिए देहातों में भेजा जाता है।

इन दिनों जन जागरण की महती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए—सृजन शिल्पियों की निजी प्रतिभा को समुचित रूप से निखारने के लिए—यह निश्चय किया है कि उदीयमान लोक सेवकों को सजीव पाठ्यक्रम पूरा करने तकही सीमित न रखा जाय वरन् उन्हें अपने कार्यक्षेत्र, व्यवधान एव समाधान को सही रूपसे समझनेके लिए प्रचार यात्रा पर भेजा जाय और सच्चे अर्थों में प्रतिभावान बनाया जाय।

इन सभी पुण्य प्रयोजनों की पूर्ति उनसे बन पड़ेगी जो स्थायी न सही एक वर्ष की प्रज्ञा प्रव्रज्या का व्रत लेकर शान्तिकुंज के निर्देशन पर अपनी गतिविधियां नियोजित करने का व्रत ग्रहण करेंगे।

इस अवधिमें जो अपना निर्वाह व्यय घरसे न चला सकेंगे उनके लिए ब्राह्मणोचित व्यवस्थाकर देनेका मिशन की ओरसे प्रावधान रखा गया है। ★

क्र०/१०१ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org